सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
नई दिल्ली

संक्षिप्त नोट
'हमारी सांस्कृतिक विविधता' पर कार्यशाला

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) सेवारत अध्यापकों हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जो कि भिन्न-भिन्न भागों के अध्यापकों को अपनी संस्कृति के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करती हैं, ताकि प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक धरोहर की विविधता और समृद्धि के प्रति वे सराहना की भावना उत्पन्न कर सकें। ये कार्यक्रम शिक्षकों को विभिन्न अनुशासनों, एक दुसरे के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान करते हैं ताकि शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण अंतर-संबंधित हो सके शिक्षक-शिक्षण की प्रक्रिया कम विभाजित हो और समृद्ध शैक्षिक अनुभव वाले छात्र तैयार कर सकें।

हमारे देश में विकास की तीव्र गति ने भौतिक पर्यावरण और सांस्कृतिक ढांचे दोनों में अभूतपूर्व पैमाने पर परिवर्तन लाये हैं। परिणामस्वरूप, एक परिचित परिवेश और संबंधित सांस्कृतिक पहचान खो रहे हैं। इस बात को समझना चाहिए कि उपेक्षा, चिंता और विचारहीन योजना के कारण आज हम क्या खो रहे हैं जिसे दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता; यह एक पौधे की प्रजाति या कोई ऐतिहासिक स्मारक भी हो सकता है।

सदियों से, भारत की समृद्ध और अलंकृत संस्कृति को या तो भुला दिया गया है या समय की धूल से ढक दिया गया है, प्रमाणिक जानकारी के अभाव के कारण गलत व्याख्या की गई। इस युग में पर्यावरण और प्रकृति के साथ हमारे अंतर्निहित संबंध खतरे में हैं जबकि शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सद्भावना के मूल्य की बार-बार कड़ी परीक्षा होती है। लिंग, उम्र, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक और वित्तीय स्थिति के साथ-साथ क्षेत्रीय या भाषाई प्राथमिकताओं के अंतर के बावजूद जीवन और इसकी समृद्ध सुंदरता का जश्न मनाने की खुशी को एक साथ फिर से बनाना महत्वपूर्ण है।

यह कहना गलत नहीं है कि यह विद्यालय है जहां राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति, सामाजिक सद्भाव और धर्मनिरपेक्षता की नींव मजबूती से रखी जा सकती है। यहीं पर एकता और विविधता की गतिशील अवधारणा को युवाओं में समाहित किया जा सकता है ताकि यह मस्तिष्क का एक हिस्सा बन सके।

"हमारी सांस्कृतिक विविधता" पर कार्यशाला इस बात पर केंद्रित है कि स्कूल राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने में कैसे मदद कर सकते हैं और छात्रों के बीच राष्ट्रीय एकता के उनके उद्देश्यों को एकीकरण का अभिन्न अंग बनाया जा सकता है। यह कार्यशाला जागरूकता पैदा करने और हमारे देश के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति को समझने के लिए सीसीआरटी की एक पहल भी है।

इस कार्यशाला में शिक्षकों को विद्यालयी छात्रों को भविष्य में हमारे देश के समृद्ध प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षक की भूमिका के प्रति संवेदनशील बनाने का कार्य करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

यह कार्यशाला लगभग 9 कार्य दिवसों की होती है।

उद्देश्य:

- भारत की जातीय और सांस्कृतिक विविधता के बारे में जागरूकता पैदा करना;
- शिक्षकों को विविध सांस्कृतिक परंपराओं और उसकी अभिव्यक्तियों को समझना और साहित्यिक कला, प्रदर्शन कला और दृश्य कला जैसे विभिन्न कला रूपों की सराहना करना;
- शिक्षकों में कला और अन्य समुदाय के परंपराओं के प्रति प्रशंसा, प्रेम और सम्मान का दृष्टिकोण विकसित करने के लिए उन्मुख करना और;
- उत्तर पूर्वी भारत के विशेष संदर्भ में जातीय समुदायों की समृद्ध परंपरा का दस्तावेजीकरण करना;
- एनईपी 2020 के अनुरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कक्षा में सांस्कृतिक घटकों को शामिल करने के लिए विविध सांस्कृतिक परंपराओं को शिक्षाशास्त्र के रूप में उपयोग करना;
- देश के विभिन्न हिस्सों के शिक्षकों को एक साथ रहने और एक-दूसरे के साथ, स्थानीय छात्रों के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान करना और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देना।

कार्यशाला में व्याख्यान, स्लाइड प्रस्तुतियाँ, संरक्षण गतिविधियाँ, स्मारकों और संग्रहालयों का अध्ययन, समूह चर्चाएँ, आदि शामिल हैं। स्कूली शिक्षा में संग्रहालयों के महत्व को बताने के लिए शैक्षिक सहायता और खेल, कार्य-पत्रक और गतिविधि-पत्रक की तैयारी पर सत्र रखे जाते हैं।

उक्त कार्यशाला के सफल समापन के बाद भाग लेने वाले शिक्षक के माध्यम से सीसीआरटी सांस्कृतिक शैक्षिक किट स्कूल को उपहार में दी जाती है।